Literacy for a Billion

Movie: Laila Majanu
Year: 1979

Song: Laila Majnu Do Badan Ek
Lyricist: Sahir Ludhianvi

लैला मजनू दो बदन इक जान थे
इक जान थे
ज़ज्बा ए इश्क़ ओ वफ़ा की शान थे
ज़ज्बा ए इश्क़ ओ वफ़ा की शान थे
ज़ज्बा ए इश्क़ ओ वफ़ा की शान थे
शान थे
लैला मजनू दो बदन इक जान थे
इक जान थे

दो कबीले आमरी और सरदारी
जिनमें थी पुश्तों पुरानी दुश्मनी
उन कबीलों के थे ये नूर ए नज़र
जिनके दिल में कर लिया उल्फ़त ने घर
और ये उल्फ़त इबादत बन गई
दुख मेरत मंशा ये कुदरत बन गई
मख़्तबूल का तौबा ये उल्फ़त बना उल्फ़त
बना
जलवा ए रूख दीद की जन्नत बना
जलवा ए रूख दीद की जन्नत बना
जन्नत बना
लैला मजनू दो बदन इक जान थे
इक जान थे

एक दिन मक्तबी मुल्ला ने कहा
सब लिखो तख्ती पे नाम अल्लाह का
सबने लिखा सिर्फ मजनू ही मगर
लैला लैला लिख रहा था बेख़बर
लैला लैला लिख रहा था बेख़बर
तैश इसपर आ गया उस्ताद को

कैसे सहता कुफ्र और इल्हाद को
उसने मजनू को सजा ए सख़्त दी
हर सजा की ज़र्ब लैला पर पडी
हर सजा की ज़र्ब लैला पर पडी
मौलवी कापाँ ये मंज़र देख कर
आबदीदा हो गया इस भूल पर
प्यार मासूमों का रूसवा हो गया
जा बजा दोनो का चर्चा हो गया
जब सुना लैला के वालिद ने ये हाल
शर्म आई और हुआ बेहद मलाल
उसने लैला से कहा मर्तब न जाओ
घर की चौखट से क़दम बाहर ना लाए

एक दिन बेकार पहरे हो गए
लैला और मजनू अचानक खो गए
दोनो सरदारों पे वहशत छा गई
म्यान से तलवार बाहर आ गई
पर जो गुज़रे एक नख्लिस्तान से
देखते ही रह गए
हैरान से हैरान से
लैला मजनू खेल में मसरूफ़ थे
लैला मजनू खेल में मसरूफ़ थे
वालिदे मजनू ने देखा गौर से
और कहा लैला के वालिद से
हुजूर
खेलने दीजे इन्हें कीजे न दूर
खेलने दीजिये इन्हें कीजिये न दूर
तैश में लैला के वालिद ने कहा
कल यही खेल एक बगा बन जाएगा

बद् दुआ होगा घरानों के लिए
शर्म होगा खानदानों के लिए
ये कहा और खिंचके लैला का हाथ
ले गया इस तरह उसको अपने साथ
ले गया इस तरह उसको अपने साथ
फिर न कोई देखने आया उन्हें
देखने आया उन्हें
जाने किस बस्ती में ठहराया उन्हें
जाने किस बस्ती में ठहराया उन्हें
जाने किस बस्ती में ठहराया उन्हें

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.